शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इतिहास के आईने में बौद्ध दर्शन

डॉ.सविता मरावी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय
समनापुर, डिंडौरी
मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

वैशाख मास की पूर्णिमा को 563 ई.पू. कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन एवं महारानी महामाया के घर में जन्मे भगवान बुद्ध, जिनका नाम समयानुसार गौतम बुद्ध सिद्धार्थ तथागत भी पड़ा, जिनके द्वारा बौद्ध धर्म की स्थापना हुई। बौद्धधर्म के अनुसार जीवन की पवित्रता को बनाए रखना और सार्थक ज्ञान में पूर्णता प्राप्त करना साथ ही तृष्णा का त्याग कर निर्वाण को प्राप्त करना जीवन का उद्देश्य है। भगवान बुद्ध के अनुसार धर्म वही है जो बिना भेदभाव के सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दे। भगवान बुद्ध के अनुसार विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है विद्वान वही है जो अपने-अपने ज्ञान की रोशनी से सभी को रोशन करे। धर्म से लोगों को जोड़ते हुए भगवान बुद्ध ने बताया है कि करुणा और मैत्री अनिवार्य है। इसके अलावा सामाजिक भेदभाव मिटाने के लिए भगवान बुद्ध ने प्रयास करते हुए लोगों का मूल्यांकन जन्म से नहीं कर्म से बताया है।

शब्द कुंजी : *हीनयान, महायान, महाभिनिष्क्रमण, महाबोधि, वज्रयान*

प्रस्तावना

भारतीय चिंतकों ने इस जगत को अपनीद-अपनी दृष्टि से समझने का प्रयास किया तथा उन प्रमाणों का अपनेद-अपने विचार से विश्लेषण किया। इस प्रकार चिंतन के इतिहास में छः पद्धतियों का विकास हुआ जिन्हें षड्दर्शन भी कहा जाता है - न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।

हिन्दू धर्मद-दर्शन के विपरीत प्रतिरोधी धर्म के रूप में कई धार्मिक संगठनों और विचारों का उदय और उत्कर्ष हुआ, जिनके कारण सम्पूर्ण भारत में विचारों की क्रांति उठ खड़ी हुई। इन धर्मों में आजीविका (आजीवक) जैन और बौद्ध धर्म प्रमुख हैं।

भारत में छठी सदी ई.पू. के समय जैन और बौद्ध के समसामयिक आजीवक धर्म का भी उत्कर्ष हुआ, जिसने उत्तर भारत के तत्कालीन समाज को अपने सिद्धांतों और मतों से प्रभावित किया। हिन्दू धर्म के प्रतिरोध में विकसित होने वाले जैन धर्म की तरह आजीवक धर्म भी था, वरन् यहाँ पर आलोच्य धर्म एवं दर्शन पर ही चर्चा किया जाना उचित है।

बौद्ध धर्म तथा दर्शन के ऊपर अनेक पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों ने ग्रंथों की रचना की है।[1] ये ग्रंथ बौद्ध दर्शन के विभिन्न अंगों तथा इस धर्म के विभिन्न संप्रदायों पर लिखे गए हैं, परंतु ऐसा कोई भी ग्रंथ अंग्रेजी या भारतीय भाषाओं में, जहां तक ज्ञात है देखने में नहीं आया जिसमें बौद्धधर्म तथा दर्शन के विभिन्न

अंगों का प्रामाणिक तथा सांगोपांग वर्णन किया गया हो।

ई.पू. छठी शताब्दी के नास्तिक संप्रदाय के आचार्यों में महात्मा गौतम बुद्ध का नाम सर्वप्रथम है। उन्होंने जिस धर्म का प्रवर्तन किया वह कालांतर में एक अन्तर्राष्ट्रीय धर्म बन गया। यदि विश्व के पर उनके मरणोत्तर प्रभावों के आधार से भी उनका मूल्यांकन किया जाय तो वे भारत में जन्म लेने वाले महानतम व्यक्ति थे।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म नाना संप्रदायों में विभक्त रहा है प्राचीन और अर्वाचीन। प्रत्येक संप्रदाय अपने को बुद्ध भगवान की आध्यात्मिक विरासत का सच्चा उत्तराधिकारी मानता है, किन्तु प्रत्येक की निष्ठा औरों से भेद रखती है और प्रतिविशिष्ट है। ऐसी स्थिति में यह मीमांस्य हो जाता है कि भगवान बुद्ध ने यथार्थ में क्या उपदेश किया और इस प्रश्न की सूक्ष्मता और जटिलता के कारण उसकी मीमांसा सावधानी से करनी होगी।[2]

गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ई.पू. कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी वन (रुमिन्देई अथवा रूमिन्देह नामक स्थान) में हुआ। इनके पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शाक्यगढ़ के प्रधान थे। उनकी माता का नाम मायादेवी था जो कोलिय गणराज्य की कन्या थी। गौतम के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनके जन्म के कुछ ही दिनों बाद उनकी माता मायादेवी का देहांत हो गया तथा उनका पालन-पोषण विमाता प्रजापति गौतमी ने किया। उनका पालनद-पोषण राजसी ऐश्वर्य एवं वैभव के वातावरण में हुआ। उन्हें राजकुमारों के अनुरूप शिक्षाद-दीक्षा दी गई। परंतु बचपन से ही वे अत्यधिक चिंतनशील स्वभाव के थे। प्रायः एकांत स्थान में बैठकर वे जीवन-मरण, सुखद-दुख आदि समस्याओं के पर गंभीरता पूर्वक विचार किया करते थे। उन्हें इस प्रकार सांसारिक जीवन से विरक्त होते देख उनके पिता को गहरी चिंता हुई। उन्होंने बालक सिद्धार्थ को सांसारिक विषय भोगों में लिप्त करने की भरपूर कोशिश की। विलासिता की सामग्रियाँ उन्हें प्रदान की गई। इसी उद्देश्य से 16 वर्ष की अल्पायु में ही उनके पिता ने उनका विवाह शाक्यकुल की एक अत्यंत रूपवती कन्या के साथ कर दिया। इस कन्या का नाम उत्तरकालीन बौद्ध ग्रंथों में यशोधरा, बिम्बा, गोपा, भदकच्छना आदि दिया गया है। कालांतर में उसका यशोधरा नाम ही सर्वप्रचलित हुआ। यशोधरा से सिद्धार्थ को एक पुत्र भी प्राप्त हुआ जिसका नाम राहुल पड़ा। तीनों ऋतुओं में आराम के लिए अलगद-अलग आवास बनवाए गए तथा इस बात की पूरी व्यवस्था की गई कि वे सांसारिक दुखों के दर्शन न कर सकें। परंतु सिद्धार्थ सांसारिक विषय भोगों में वास्तविक संतोष नहीं पा सके। विहार के लिए जाते हुए उन्होंने प्रथम बार वृद्ध द्वितीय बार एक व्याधिग्रस्त मनुष्य, तृतीय बार एक मृतक तथा अंततः एक प्रसन्नचित्त संन्यासी को देखा। उनका हृदय मानवता को दुख में फंसा हुआ देखकर अत्यधिक खिन्न हो उठा। बुढ़ापा, व्याधि तथा मृत्यु जैसी गंभीर सांसारिक समस्याओं ने उनके जीवन का मार्ग बदल दिया और इन समस्याओं के ठोस हल के लिए उन्होंने अपनी पत्नी एवं अपने पुत्र को सोते हुए छोड़कर गृह त्याग दिया। उस समय सिद्धार्थ की आयु 29 वर्ष की थी। इस त्याग को बौद्ध ग्रंथों में 'महाभिनिष्क्रमण' की संज्ञा दी गई है।

इसके पश्चात ज्ञान की खोज में वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करने लगे। सर्वप्रथम वैशाली के समीप अलारकालाम नामक संन्यासी के आश्रम में उन्होंने तपस्या की। वह सांख्य

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दर्शन का आचार्य था तथा अपनी साधना.शक्ति के लिए विख्यात था। परंतु यहाँ उन्हें शांति नहीं मिली। यहाँ से वे रुद्रकरामपुत्त नामक एक दूसरे धर्माचार्य के समीप पहुंचे जो राजगृह के समीप आश्रम में निवास करता था। यहाँ भी उनके अशांत मन को संतोष नहीं मिल सका। खिन्न हो उन्होंने उनका भी साथ छोड़ दिया तथा उरुवेला (बोधगया) नामक स्थान को प्रस्थान किया। यहाँ उनके साथ पाँच ब्राह्मण संन्यासी भी आए थे। अब उन्होंने अकेले तपस्या करने का निश्चय किया। प्रारंभ में उन्होंने एक ऐसी साधना प्रारंभ की जिसकी पद्धति पहले की अपेक्षा कुछ सरल थी। इस पर उनका अपने साथियों से मतभेद हो गया तथा वे उनका साथ छोड़कर सारनाथ में चले गए। सिद्धार्थ अन्न-जल भी ग्रहण करने लगे। छः वर्षों की साधना के पश्चात पैंतीस वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात को एक पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें 'ज्ञान' प्राप्त हुआ। अब उन्होंने दुख तथा उसके कारणों का पता लगा लिया। इस समय से वे 'बुद्ध' नाम से विख्यात हुए।

भारत में हमें बौद्ध काल में दार्शनिक चिंतन की प्रगति साधारणतः किसी ऐतिहासिक परंपरा पर होने की किसी प्रबल आक्रमण के कारण ही संभव होती है, जबकि मनुष्य समाज पीछे लौटने को और उन मूलभूत प्रश्नों को एक बार फिर उठाने के लिए बाध्य हो जाता है, जिनका समाधान उसके पूर्व पुरूषों ने प्राचीनतर योजनाओं के द्वारा किया था। बौद्ध तथा जैन धर्मों के विप्लव ने वह विप्लव अपने आप मे चाहे जैसा भी था, भारतीय विचारधारा के क्षेत्र में एक विशेष ऐतिहासिक युग का निर्माण किया, उसने कट्टरता की पद्धति को अंत में उड़ाकर ही दम लिया तथा एक समालोचनात्मक दृष्टिकोण को उत्पन्न करने में सहायता दी।[3] महान बौद्ध विचारकों के लिए तर्क ही ऐसा मुख्य शस्त्रसागर था जहाँ सार्वभौम खंडनात्मक समालोचना के शस्त्र गढ़कर तैयार किए गए थे। बौद्ध धर्म ने मस्तिष्क को पुराने अवरोधों के कष्टदायक प्रभावों से मुक्त करने में विरेचन का काम किया है।

शोध का उद्देश्य

तथागत द्वारा स्थापित बौद्धधर्म में शोध का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक भारतीयों के मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक आदि जीवन के सभी क्षेत्रों को विकसित करना है।

परिकल्पना

भगवान बुद्ध का बचपन से ही पालनद-पोषण शिक्षा-दीक्षा राजकुमारों के अनुरूप की गयी, परंतु भगवान बुद्ध ने वैभव विलासिता एवं पारिवारिक मोह का त्यागकर अंततः 'ज्ञान' को प्राप्ति किया, जिस कारण उन्हें लोगों द्वारा ईश्वर का दर्जा दिया गया है।

आधुनिक युग में भगवान बुद्ध जैसा त्याग कर पाना असंभव है, किन्तु उनके विचारों एवं आदर्शों को अपने जेहन में उतारा जाना संभव है। भावी पीढ़ी को उनके त्याग तपस्या एवं संयम को बताना समझाना हमारा कर्तव्य है, जिससे वे उनके नक्शे-कदम पर चलकर एवं उनके जीवन शैली का अनुकरण कर अपने भविष्य को सुंदर बना सकें।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र को तैयार करने में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि के अंतर्गत द्वितीयक शोध के रूप में मनीषियों द्वारा लिखे गए ग्रंथों का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अध्ययन एवं अवलोकन कर लेखन कार्य में सहायता प्राप्त की गयी।

बौद्धधर्म के संस्थापक भगवान बुद्ध थे। इन्हें एशिया का 'ज्योति पुंज' भी कहा जाता है। बौद्धधर्म भारत की श्रमण परंपरा से निकला धर्म और दर्शन है। यह संसार का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। इसे मानवीय धर्म भी कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें ईश्वर को नहीं मानव को महत्व दिया गया है।

बौद्ध धर्म का उत्थान और पतन

महात्मा गौतम बुद्ध ने जिस धर्म का प्रवर्तन किया वह उनके जीवन काल में ही उत्तरी भारत का एक लोकप्रिय धर्म बन गया। इसकी सफलता के लिए निम्नलिखित कारण मुख्य रूप से उत्तरदायी थे :

1 बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए स्वयं महात्मा बुद्ध का आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व बहुत कुछ अंशों में उत्तरदायी रहा। ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने अपने मत का प्रचार करने के लिए व्यापक रूप से परिभ्रमण किया। दूरद-दूर स्थानों में जा कर सामान्य जनता के बीच उन्होंने अपने उपदेश दिए। ये अत्यंत सरल एवं सुग्राह्य होते थे। उनकी दृष्टि में अमीर-गरीब का कोई भेदभाव नहीं था तथा सभी वर्गों के लोग, चाहे वे ब्राह्मण हों या शूद्र, इन्हें श्रवण कर सकते थे और अपना सकते थे। बुद्ध मानव मात्र की समानता में विश्वास रखते थे। उनके ओजपूर्ण तर्कों को सुनकर लोग प्रभावित हो जाते तथा उनका शिष्यत्व ग्रहण कर लेते थे।

2 बौद्धधर्म का दार्शनिक एवं क्रियापक्ष अत्यंत सरल था। ब्राह्मण धर्म की कर्मकांडीय व्यवस्था से लोग ऊब गए थे। ऐसे समय में बौद्ध धर्म ने जनता के समक्ष एक सरल एवं आडंबर रहित धर्म का विधान प्रस्तुत किया। इसके पालनार्थ किसी पंडित-पुरोहित की आवश्यकता नहीं थी और न ही जाति एवं सामाजिक स्तर का कोई भेदभाव था। अतः समाज के उपेक्षित वर्गों ने उत्सुकतापूर्वक इस धर्म को ग्रहण कर लिया।

3 महात्मा बुद्ध के समय से पालि सामान्य जनता की भाषा थी। उन्होनें अपने उपदेश पालि में दिए। जिससे सामान्यजन इसे आसानी से समझ सकें। इसके विपरीत ब्राह्मण धर्म साहित्य क्लिष्ट संस्कृत में होने के कारण सभी के द्वारा बोधगम्य नहीं था। भाषा की सुगमता तथा बोधगम्य होने से भी बौद्धधर्म को लोकधर्म बनाने में योगदान दिया।

4 ब्राह्मण धर्म के कर्मकांडों एवं उसकी क्रियाओं के अनुष्ठान में बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती थी। जिससे केवल कुलीन वर्ग के लोग ही इन्हें संपादित कर सकते थे। इसके विपरीत बौद्ध धर्म के अनुपालन में किसी व्यय की आवश्यकता नहीं थी। इसमें केवल नैतिकता तथा सच्चरित्रता पर बल दिया गया था। अतः आधिकाधिक लोग इस मत की ओर आकर्षित हुए।

5 महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन काल में ही संघ की स्थापना की थी। बाद में इन्हीं संघों द्वारा बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार हुआ। इनमें बहुसंख्यक भिक्षु निवास करते थे। वे स्थानस्थान पर जाकर अपने मत का प्रचार-प्रसार करते थे। बौद्धसंघ देश के विभिन्न भागों में फैले हुए थे।

6 बौद्ध धर्म के प्रसार में राजकीय संरक्षण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वयं बुद्ध के समय में तथा उनके बाद भी भारत के अनेक महान राजाओं ने इस धर्म को ग्रहण किया था। इसके प्रचार-प्रसार में अपने राज्य के साधनों को लगा दिया। ऐसे राजाओं में बिंबिसार आजतशत्रु, कनिष्क, हर्षवर्धन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अशोक ने तो इस धर्म को स्थानीय स्तर पर

ऊपर उठा कर अपने प्रयासों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचा दिया। मध्य एशिया, चीन, कोरिया, जापान, लंका, दक्षिणी-पूर्वी एशिया आदि विभिन्न भागों में इस धर्म का प्रचार हुआ। अशोक ने यूनानी राज्यों में भी इसका प्रचार करवाया था।

7 बौद्ध धर्म को तत्कालीन भारत के सुप्रसिद्ध व्यापारियों एवं साहूकारों ने भी उदारता पूर्वक धन दान दिया, क्योंकि इसके सिद्धांत उनकी कुछ मान्यताओं के अनुकूल थे। बुद्ध ने सूदखोरी को सम्मानित व्यवसाय मानते हुए उसको मान्यता प्रदान की जबकि ब्राह्मण ग्रंथ इसे निंदनीय मानते थे। इस कारण उस युग के श्रेष्ठ बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हो गए। इनकी सहायता से इसके समक्ष कोई आर्थिक संकट उपस्थित नहीं हुआ।

सातवीं शताब्दी तक भारत में बौद्ध धर्म की निरंतर प्रगति होती रही। तत्पश्चात उसका क्रमिक ह्रास प्रारंभ हुआ तथा अंततोगत्वा बारहवीं शताब्दी तक यह धर्म अपनी मूलभूमि से विलुप्त हो गया। बौद्ध धर्म के अवनति काल में बिहार तथा बंगाल के पाल राजाओं ने उसे संरक्षण प्रदान किया, किन्तु उनके बाद इसे कोई संरक्षण नहीं मिला। बौद्ध धर्म के पतन के लिए विभिन्न कारणों को उत्तरदायी माना गया है। इसमें मुख्य कारण बौद्ध संघ में विभेद तथा उसका अनुयायियों का विभिन्न संप्रदायों में विभाजित होना है। कनिष्क के समय में यह धर्म स्पष्टतः हीनयान तथा महायान नामक दो संप्रदायों में विभाजित हो गया। महायानियों ने हिन्दू धर्म की पूजा.पद्धति एवं संस्कारों को अपना लिया तथा बुद्ध को देवता मानकर उनकी पूजा प्रारंभ कर दी गई। साथ ही साथ अनेक बोधिसत्वों की पूजा का विधान प्रस्तुत किया गया। बुद्ध तथा बोधिसत्वों की उपासना के लिए मंदिरों का भी निर्माण हुआ। बुद्ध तथा बोधिसत्वों के अतिरिक्त अन्य कई देवी-देवताओं का भी इस मत में आविष्कार हो गया, जिन्हें बुद्ध के विविध प्रतीकों से संबंधित करके पूजा जाने लगा। इस प्रकार बौद्ध धर्म हिन्दू धर्म के अत्यंत निकट आ गया।

बुद्ध हमारे लिये इस देश में हमारी धार्मिक परंपरा का एक अलौकिक प्रतिनिधि है। उसने भारत भूमि पर अपने अमिट पदचिह्न छोड़े। इस देश की अपनी सारी आदतों और रूढ़ियों के बावजूद देश की आत्मा पर बुद्ध की छाप है। दुनिया के दूसरे देशों में उनकी अपनी-अपनी परंपराओं के अनुसार बुद्ध के उपदेश ने निश्चित रूप धारण किए परंतु यहाँ बुद्ध के अपने घर में उसकी शिक्षा हमारी संस्कृति में समाविष्ट हो गई और उसका आवश्यक अंग बन गई।[4]

बौद्धविहार तथा मंदिरों में महिलाओं का प्रवेश हो जाने से भ्रष्टाचार बढ़ गया तथा भिक्षुओं का चारित्रिक पतन हो गया। बौद्ध धर्म में नैतिकता का स्थान तंत्र-मंत्र ने ग्रहण कर लिया तथा भिक्षु अनेक गूढ़ एवं तांत्रिक साधनाओं द्वारा लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने लगे। तांत्रिक भिक्षुओं का संप्रदाय 'वज्रयान' कहा गया। वे अपनी साधना में सुराद-सुंदरी को प्राथमिकता देने लगे। उनकी संख्या बढ़ती गई, जिससे बौद्ध धर्म का मूल स्वरूप ही नष्ट हो गया। नवीं शती तक आते-आते वज्रयान का भारत में खूब प्रचार हो गया। नालंदा उनके प्रचर का प्रमुख केंद्र बन गया। बारहवीं शती तक बौद्धधर्म पूर्णरूप से तंत्रयान (वज्रयान) के प्रभाव में आ गया। तांत्रिक भिक्षु तारादेवी की उपासना करते थे। बौद्ध धर्म में किसी ऐसे महापुरुष का जन्म नहीं हुआ जो उसमें व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर उसे सही दिशा दे सकता। इधर हिन्दू धर्म में शंकर,

कुमारिल, रामानुज जैसे महान आचर्यों का आविर्भाव हुआ। उन्होंने हिन्दू धर्म की व्याख्या नए सिरे से की, जिससे अधिकाधिक लोग इस धर्म की ओर आकर्षित हो गए। बुद्ध को भगवान विष्णु का एक अवतार मानकर हिन्दू धर्म में ग्रहण कर लिया गया। इसके फलस्वरूप बहुसंख्यक बौद्धों ने हिन्दू धर्म को ग्रहण कर लिया।

हमारा देश आध्यात्मिक देश है। इस देश का इतिहास साक्षी है कि यहाँ कितने ही धर्मों, मतों और संप्रदायों ने जन्म लिया। इस देश के मनुष्य समाज में कितने ही ऋषि, मुनि और महात्माओं ने जन्म लिया, अपने विचारों का प्रचार किया और लोगों ने उनके विचारों को अपने जीवन का आदर्श स्वीकार कर लिया। इस देश में सदा ही लोगों ने अपने गुरुजनों, महापुरुषों और मुनियों के द्वारा बताए मार्ग को अपनाए रखने के लिए कितने ही बलिदान किए, उन्होंने प्राणों का मोह त्याग कर अपने 'धर्म की रक्षा की।"[5]

जिस समय उत्तरी भारत में बौद्ध धर्म वज्रयानियों द्वारा नैतिकता विहीन तथा जर्जर किया जा रहा था उसी समय वहाँ तुर्कों का आक्रमण हुआ। इस आक्रमण ने पतनोन्मुख को घातक चोट पहुंचायी, जिससे वह कभी उभर न सका। नालंदा तथा अन्य स्थानों के प्रसिद्ध बौद्ध मठ तथा स्मारक ध्वस्त कर दिए गए तथा बहुसंख्यक भिक्षुओं की हत्या कर दी गई। इस आक्रमण ने तंत्रयानियों की सिद्धि-शक्ति एवं तंत्र-मंत्र के प्रभाव को सिद्ध कर दिया। फलस्वरूप भारतीय जनता का विश्वास उनसे उठ गया तथा किसी ने उन्हें शरण अथवा सहायता न देकर उनके ध्वस्त स्मारकों के जीर्णोद्धार करने का प्रयास नहीं किया। अधिकांश बौद्ध भिक्षु तिब्बत भाग गए। बचे हुए में से कई ने हिन्दू तथा इस्लाम आदि धर्मों को ग्रहण कर लिया। इस प्रकार बौद्ध धर्म अपनी जन्म भूमि से विलुप्त हो गया।

जी.सी. पाण्डेय यह स्वीकार नहीं करते कि बौद्ध धर्म के पतन में तंत्रयानियों के आचार अथवा कुमारिल और शंकर जैसे हिन्दू दार्शनिकों के वाद-कौशल का हाथ रहा है। उनके अनुसार शैव तथा शाक्य धर्म में भी तांत्रिक आचार तथा उनसे संबंध कुछ विकृतियाँ विद्यमान थीं, किन्तु इनका विलोप नहीं हुआ और न ही तार्किक खंडन से किसी धर्म का लोप माना जा सकता है। वस्तुतः बौद्ध धर्म मुख्य रूप से भिक्षुओं का धर्म था जिनका जीवन विहारों में केंद्रित था।[6] उपासकों के लिए यह अपना पृथक और पर्याप्त नैतिक-सामाजिक आचार एवं संस्थाएं विहित नहीं कर पाया था। बौद्ध विहार प्रायः राजकीय अनुदान पर निर्भर थे। अतः विहारों के लोप के साथ-साथ उपासकों की क्षीण बौद्धता का विलोप अनिवार्य था।

संप्रति भारत में महाबोधि सभा, जिसकी स्थापना सिंघल के स्वर्गीय देवमित्र धर्मपाल ने की थी, बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करने का श्लाघ्य प्रयास कर रही है।

बौद्ध धर्म की देन

भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों के निर्माण एवं विकास में बौद्ध धर्म का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। हम इसकी देनों को निम्नलिखित प्रकार से रख सकते हैं :

1 बौद्धधर्म ने ही सर्वप्रथम भारतीयों को एक सरल तथा आडंबररहित धर्म प्रदान किया, जिसका अनुसरण राजा-रंक, ऊंच-नीच सभी कर सकते थे। धर्म के क्षेत्र में इसने अहिंसा एवं सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया। अशोक, कनिष्क, हर्ष आदि राजाओं में जो धार्मिक सहिष्णुता देखने को

मिलती है वह बौद्ध धर्म के प्रभाव का ही परिणाम थी। अशोक ने युद्ध विजय की नीति का परित्याग कर धम्मविजय की नीति को अपनाया तथा लोककल्याण का आदर्श समस्त विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

2 बौद्ध धर्म के उपदेश तथा सिद्धांत पालि भाषा में लिखे जिससे पालि भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ।

3 बौद्ध संघों की व्यवस्था जनतंत्रात्मक प्रणाली पर आधारित थी। इसके तत्वों को हिन्दू मठों तथा बाद में राजशासन मे ग्रहण किया गया।

4 भारतीय दर्शन में तर्क शास्त्र की प्रगति बौद्ध धर्म के प्रभाव से ही हुई। बौद्ध दर्शन में शून्यवाद तथा विज्ञानवाद की जिन दार्शनिक पद्धतियों का उदय हुआ उनका प्रभाव शंकराचार्य के दर्शन पर पड़ा। यही कारण है कि शंकराचार्य को कभी-कभी प्रच्छन्न-बौद्ध भी कहा जाता है।

5 बौद्ध धर्म ने लोगों के जीवन का नैतिक स्तर ऊंचा उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जन-जीवन में सदाचार एवं सच्चरित्रता की भावनाओं का विकास हुआ। बुद्ध स्वयं नैतिकता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे तथा ज्ञान से भी इसे बढ़कर मानते थे।

6 बौद्ध धर्म ने न केवल भारत अपितु विश्व के देशों को अहिंसाए शांति, बंधुत्व, सह-अस्तित्व आदि का आदर्श बताया। इसके कारण ही भारत का विश्व के देशों पर नैतिक अधिपत्य कायम हुआ। बुद्ध ने मानव जाति की समानता का आदर्श प्रस्तुत किया था।

7 बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत का सांस्कृतिक संपर्क विश्व के विभिन्न देशों के साथ स्थापित हुआ। भारत के भिक्षुओं ने विश्व के विभिन्न भागों में जा कर अपने सिद्धांतों का प्रचार किया। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं से आकर्षित होकर शक, पर्शियन, कुषाणादि विदेशी जातियों ने बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया। यवन शासक मेनाण्डर तथा कुषाण शासक कनिष्क ने इसे राजधर्म बनाया और अपने साम्राज्य के साधनों को इसके प्रचार में लगा दिया। अनेक विदेशी यात्री तथा विद्वान बौद्ध धर्म का अध्ययन करने तथा पवित्र बौद्ध स्थलों को देखने की लालसा से भारत की यात्रा में आए। फ़ाहियान व्हेनसॉन्ग तथा इत्सिंग जैसे चीनी यात्रियों ने भारत में वर्षों तक निवास कर इस धर्म का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त किया। आज भी विश्व की एक तिहाई जनता बौद्ध धर्म तथा उसके आदर्शों में अपनी श्रद्धा रखती है।

8 बौद्धधर्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण देन भारतीय कला एवं स्थापत्य के विकास में रही। इस धर्म की प्रेरणा पाकर शासकों एवं श्रद्धालु जनता द्वारा अनेक स्तूप विहार, चैत्यग्रह, गुफाएं, मूर्तियाँ आदि निर्मित की गयी, जिन्होंने भारतीय कला को समृद्धिशाली बनाया। सांची, सारनाथ, भरहुत आदि के स्तूप, अजंता की गुफ़ाएं एवं उनकी चित्रकारियाँ अनेक स्थानों से प्राप्त एवं संग्रहालयों में सुरक्षित बुद्ध एवं बोधिसत्वों की मूर्तियाँ आदि बौद्ध धर्म की भारतीय संस्कृति की अनुपम देन है। गांधार, मथुरा, अमरावती, नासिक, कार्ले, भाजा आदि बौद्धकला के प्रमुख केंद्र थे। गांधार शैली के अंतर्गत ही सर्वप्रथम बुद्ध मूर्तियों का निर्माण किया गया। आज भी भारत के कई स्थानों पर बौद्ध स्मारक विद्यमान हैं तथा श्रद्धालुओं के आकर्षण के केंद्र बने हुए हैं।

9 विश्व के देशों को अहिंसा, करुणा, प्राणिमात्र पर दया आदि का संदेश भारत ने बौद्ध धर्म के माध्यम से ही दिया।

बौद्ध काल की बनी मूर्तियाँ और स्तूपों की छटा आज भी बोधगया.मंदिर के प्रांगण में अच्छी तरह

देखी जा सकती है, जो अपने युग का गौरव प्रकट करती है। बोधगया के संन्यासी मठ के प्रांगण में अनेक कलापूर्ण मूर्तियाँ अव्यस्थित रूप में रखी हैं, जिनके कला कौशल को देखकर शिल्पी स्तब्ध रह जाते हैं। गया जिले के 'कुर्किहार गांव' में पालकाल में अष्टछाप, तांबे और सोने की असंख्य मूर्तियाँ ढलती थीं और पत्थर की भी बनती थीं। तांबे और अष्टधातु की अनेक मूर्तियाँ जो कुर्किहार से प्राप्त हुई आज पटना संग्रहालय में देखी जा सकती हैं।[7]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शताब्दियों पूर्व महात्मा बुद्ध ने जिन सिद्धांतों एवं आदर्शों का प्रतिपादन किया वे आज के वैज्ञानिक युग में भी अपनी मान्यता बनाए हुए हैं तथा संसार के देश उन्हें कार्यान्वित करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत ने अपने राजचिन्ह के रूप में बौद्ध प्रतीक को ही ग्रहण किया है तथा वह शांति एवं सह-अस्तित्व के सिद्धांतों का पोषक बना हुआ है।

निष्कर्ष

तथागत का संदेश जितना ऐतिहासिक दृष्टि से चिरंतन और तात्विक दृष्टि से सनातन है उतना ही वह इस समय प्रासंगिक है। वह विश्व शांति अहिंसा मैत्री, करुणा और सहिष्णुता का संदेश है। ये उदात्त भाव किस प्रकार चरितार्थ किए जा सकते हैं और कैसे आंसुओं का सागर पार किया जा सकता है। इसका मार्ग तथागत ने बताया वह मार्ग विशुद्ध नैतिकता और बौद्धिकता का है। शमथ और विपश्यना का है। यह भी उल्लेखनीय है कि तथागत का संदेश सामाजिक भेदभाव का विरोधी था और शब्द प्रमाण के स्थान पर अनुभूति और बुद्धि को ही प्रमाण मानता था। ऐसा संदेश वर्तमान युग में विशेष रूप से प्रासंगिक है जो भारतीय मनीषियों को केवल परंपरावादी मानते हैं और एक संस्कृति की सीमाओं से सीमित, उन्हें बौद्ध धर्म दर्शन एवं नीति पर ध्यान देना चाहिए, जिनमें स्वतंत्र प्रज्ञा की क्रान्तिकारिता और सार्वभौमिकता सुस्पष्ट है। बौद्ध संस्कृति, विशाल संस्कृति है जिसका केंद्र बिन्दु मनुष्य है। मनुष्य के अलावा कुछ नहीं है। इसलिये मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक आदि जीवन के सभी क्षेत्रों को विकसित कर परम शांति प्राप्त कराना बौद्धधर्म का लक्ष्य है। बौद्ध धर्म के नियम :

1 पराए धन का लोभ न करना
2 हिंसा नहीं करना
3 नशे का सेवन नहीं करना
4 झूठ नहीं बोलना
5 दुराचार से दूर रहना

गौतम बुद्ध ने दुख की निवृत्ति के लिए अष्टविधि मार्ग बताया है। यह अष्टविधि मार्ग ई.पू. तीसरी सदी के आसपास के एक ग्रंथ में बुद्ध द्वारा बताया गया है। यह आठ साधन निम्न हैं : सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। यदि कोई व्यक्ति इन आठ मार्गों का अनुकरण करे तो वह पुरोहितों के घेरे में नहीं पड़ेगा और वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1 उपाध्याय बलदेव, बौद्ध दर्शन मीमांसा, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी, सं 2003, पृष्ठ 1
2 पाण्डेय, जी.सी., बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, उ.प्र. हिन्दी संस्थान, 1990, पृष्ठ 50
3 डॉ. राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, 1989, पृष्ठ 276
4 वापट पी.वी., बौद्ध धर्म के पच्चीस वर्ष, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 18
5 व्यास रामनारायण, धर्म दर्शन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, 1972, पृष्ठ 10

6 श्रीवास्तव के.सी., प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद 1991

7 त्रिपाठी हवलदार सहृदय, बुद्ध कथा बौद्ध धर्म और बिहार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना,1998, पृष्ठ 298